पाखंड में नर क्यों भटका खावे रे लिरिक्स

पाखंड में नर क्यों भटका खावे रे,

दोहा – उपकार बडो निज धर्म कहे,
तन से मन से धन से कर रे,
धन संग चले परमार्थ तो,
नित खूब कमा वित जो भर रे।
कर सोच रे धनवान कहां,
तज भूप गए धरणी धर रे,
चल भारती पूरण आज यहां,
कल होय कहां अपनो घर रे।

समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यों भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।bd।

नीति बिना नहीं सुख सपने में,
संत ग्रंथ शब्द गावे रे,
नीति तो नारायण साथी,
सब दुख जावे रे,
समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यो भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।bd।

कर्म हीन ज्योतिष को जाके,
भविष्य योग दिखावे रे,
भाग भरोसे रहे आलस्य में,
सब दुख आवे रे,
समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यो भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।bd।

करणी में विश्वास नहीं जड़,
पूजा कर सुख छावे रे,
रहे सत्संग से दूर मूर्ख,
पाखंड को ही अपनावे रे,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी आपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यो भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।lbd।

चेतन भारती सतगुरु सुख को,
पंथ संत समझावे रे,
कर पुरुषार्थ भारती पुरण,
यू मस्त रहावे रे,
समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यो भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।lbd।

समझ सुख पावे रे,
पाखंड में नर क्यो भटका खावे रे,
समझ सुख पावे रे।lbd।

गायक – पुरण भारती जी महाराज।
Upload By – Aditya Jatav
8824030646

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com